मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

जून 2025
मूल्य 10.00 रुपए

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

OPERATION SINDOOR

भारतीय शौर्य का अमिट अध्याय

ऑपरेशन सिंदूर भारतीय योद्धाओं के अदम्य साहस का प्रतीक है, जिसे सदियों तक याद रखा जाएगा। मात्र चार दिनों में दुश्मन को घुटने टेकने पर मजबूर कर एवं पाकिस्तान द्वारा पोषित आतंकियों के प्रमुख अड्डों को भारतीय वीरों ने नष्ट कर दुनियाँ को शक्तिशाली भारत का संदेश दे दिया।

SHAKTI®
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं
शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

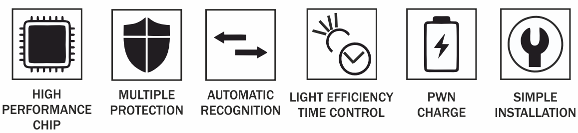

कार्यप्रणाली

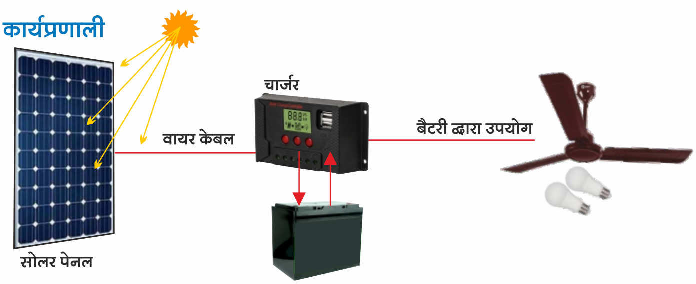

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : ०४ अंक : ०१
•••
आषाढ़ शुक्ल 10
युगाब्द ५१२७

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
राकेश दाँगी
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
राजेश सोनी
अशोक वर्मा
योगेश भोपे
सौरभ मारु
अमन व्यास
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित।
संपादक राकेश दाँगी
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

पहलगाम का आतंकी हमला, पूरी मानवता को झकझोरने वाला है। इस्लामी जिहाद पूरे विश्व के लिए घोर चिन्ता का विषय है। इस कट्टर मजहबी सोच की आग जिन आतंकवादियों के मन में जल रही है उसे बुझाना हम सभी का परम धर्म है। पहलगाम का हमला अचानक नहीं हुआ है बल्कि यह एक सोची-समझी साजिश है।

इस हमले में धर्म पूछकर हमारी बहनों का सिन्दूर उजाड़ा गया था। इसीलिए इस हमले का बदला लेने के लिए की गई कार्रवाई को ऑपरेशन सिन्दूर नाम देकर दुश्मन पर प्रहार किया गया। ऑपरेशन सिन्दूर नये भारत की दृढ़ इच्छाशक्ति, शौर्य और पराक्रम का अद्वितीय उदाहरण है। भारत अब झुकता नहीं बल्कि दुश्मन को घर में घुसकर मारता है। हमारी सेना ने यह सिद्ध कर दिया कि हम अपने दम पर पाकिस्तान में पल रहे आतंकियों का समूल नाश कर सकते हैं। इस ऑपरेशन की सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि जिन अस्त्र-शस्त्रों का इसमें उपयोग किया गया वे हमारे देश में ही बने हैं। यह हमारी स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता का प्रमाण है। इसके द्वारा पूरे विश्व को पाकिस्तान की औकात बता दी गई।

सीज़फायर का मतलब अभी आपरेशन रुका नहीं है, कुछ समय के लिए अल्प विराम लिया गया है। पाकिस्तान ने हाथ जोड़कर इसे रोकने का आग्रह किया था। जिस दिन भी पाकिस्तान ने कोई हरकत की यह ऑपरेशन कई गुना शक्ति के साथ फिर से प्रारम्भ हो जाएगा। अभी तो यह ट्रेलर था, असली पिक्चर तो अभी बाकी है। यह संघर्ष विराम भारत की शर्तों पर हुआ है। भारत की सहनशक्ति जब समाप्त हो जाती है तो फिर दुश्मन की खैर नहीं।

इस ऑपरेशन से विश्व में भारतमाता का मान बढ़ा है। यह गौरव का भाव अखंड रूप से बना रहे इसके लिए प्रत्येक भारतीय को सदैव तैयार रहना है।

भारतीय सेना की शक्ति
दुनिया में मशहूर की।
आतंकियों का अंत करेंगे
कसम हमें सिन्दूर की।।

- देवकृष्ण व्यास

हमारे मालवा के यात्री भी बलिदान हुए पहलगाम में

डॉ. उत्तम मोहन सिंह मीणा

जिहादी आतंकियों द्वारा की गई पहलगांव हमले की घटना में इंदौर के निवासी ईसाई धर्मावलंबी सुशील नथानियल ने भी अपनी जान गवा दी। सुशील नथानिएल के पार्थिव शरीर को बाद में इंदौर के एक ईसाई कब्रिस्तान में दफनाया गया। रिलिजन से ईसाई सुशील नथानियल, पत्नी जेनिफर, बेटी आकांक्षा और बेटे ऑस्टिन के साथ बैसरन में थे तभी आतंकियों ने सुशील को घुटनों के बल बैठाकर कलमा पढ़ने को कहा। जब वह कलमा नहीं पढ़ सके और स्वयं को एक ईसाई बताया तो जिहादियों ने उन्हें गोली मार दी। इस घटना में उनकी बेटी आकांक्षा को पैर में गोली लगी है। मतलब इस घटना में जिहादी आतंकियों ने किसी को मारने में कोई दया नहीं दिखाई, जबकि मीडिया में ऐसा प्रोपोगेंडा चलाया गया कि हमले मे किसी महिला को नहीं मारा गया। इसी प्रकार केरल से आया 23 लोगों का एक समूह इस हमले में बाल-बाल बचा। उनके मध्य की एक महिला ने मीडिया को दिए साक्षात्कार में बताया कि उन्होंने पूर्व से ही कुछ संकेत निर्धारित किए हुए थे। जब उन्हें आतंकी घटना का भय हुआ तो वह समूह अपने संकेतों के आधार पर घटना स्थल से पहले ही उतर गया और उनके प्राण बच गए।

हमले में आतंकियों के हाथ प्राण गंवाने वाली एक महिला ने एक समाचार चैनल से बातचीत में बताया था कि मैं, पति और बच्चे के साथ कश्मीर की ट्रिप के लिए पहलगाम गई थी जहा हम मिनी स्विट्जरलैंड प्वाइंट पर पहुंचे, तभी हमको गोली चलने की आवाज सुनाई दी। हमें लगा आर्मी की ड्रिल है किंतु जब हमने देखा तो सभी लोग भाग रहे थे और इसी के मध्य मेरे पति की जिहादियों द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गई। पति की मृत्यु पर दुखी स्त्री ने उस आतंकी से स्वयं और अपने बच्चे को भी मारने का निवेदन किया तो आतंकी ने कहा, **हम तुम्हें नहीं मार रहे है, मोदी को जाकर बोल देना।**

महाराष्ट्र से इस घटना में विधवा हुई एक निःसहाय पत्नी ने बताया कि, वे आतंकी हमसे अजान पढ़ने को कह रहे थे जिसके बाद सभी महिलाओं ने जोर-जोर से अजान पढ़ना शुरू किया लेकिन आतंकियों ने वहां उपस्थित पुरुषों को चुन-चुन कर मार डाला। इस पूरे घटनाक्रम में केवल मात्र एक मुस्लिम घोड़ेवाला जिहादियों द्वारा मारा गया, जिसका मीडिया के एक धड़े ने बहुत प्रचार किया। किंतु जब स्थानीय लोगों से चर्चा की गई तो उन्होंने बताया कि आतंकियों ने उसे भी नग्न कर उसके गुप्तांग को देखा। फिर भी भरोसा नहीं होने पर उससे कलमा पढ़ने को बोला। कलमा पढ़ने की तहजीब किसी दूसरे इस्लामिक फिरके की थी। यह देखकर आतंकियों ने उस दूसरे फिरके वाले मुस्लिम को भी मौत के घाट उतार दिया। यह घटना भारतीय राष्ट्र के लिए एक दुखद ओर उसके साथ शत्रुभाव रखने वाले के लिए बड़ी सुखद हो सकती थी किंतु हमारे देश की सरकार और सेना ने इसका सशक्त उत्तर उन्हें दिया है। यह प्रत्युत्तर उन्हें आगे से कोई हमला करने से बार-बार रोकेगा। पहले के बार-बार के जिहादी हमलों से जूझते भारत के समक्ष यह एक बड़ा प्रमाण है जिससे हम आज एक सशक्त भारत को देख पा रहे हैं।

ऑपरेशन सिंदूर....

शौर्य पराक्रम संबल इसका नूर बना।
यह सतीत्व की शक्ति सदा भरपूर बना।
किंतु किसी ने इसको छूना भी चाहा,
तो फिर ख़ुद में बारूद यही सिंदूर बना।।

आँखें उठाई भारत पर तो बिन आँखों के जाओगे।
पानी माँगोगे, सूखे होठों की पीर सुनाओगे।
प्राणों की रक्षा के हित सिंदूर मांग में युग-युग तक,
सदा अमर सिंदूर उसे तुम कभी मिटा न पाओगे।।

सिंदूर अमर है मेरा, सूरज ज्यों दिखे गगन में।
अर्पित मेरी श्रद्धा के, जितने भी हैं फूल चमन में।
तुम गए लगाकर दिल से, भारत माता के जयकारे,
पर एक क्रांति साहस की, पैदा कर गए वतन में।।

'जिहादी आतंकवाद पर प्रहार आपरेशन सिंदूर'

डॉ. सुब्रतो गुहा

जम्मू-कश्मीर का सुन्दर पर्यटन स्थल पहलगाम। जहाँ बैसरन क्षेत्र में दिनांक 22 अप्रैल को कुख्यात पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैय्यबा की कश्मीर इकाई द रेजिस्टेंस फ्रंट के आतंकवादियों ने छब्बीस हिन्दू पर्यटकों को कलमा पढ़ने की चुनौती देकर एवं वस्त्र उतरवा कर हिन्दू पहचान पता करने के बाद गोली मारकर हत्या कर ही और साथ ही रोती-बिखलती उनकी पत्नियों एवं महिला रिश्तेदारों से कहा **जाओ प्रधानमंत्री मोदी को बता देना।** स्पष्ट था कि इस्लामी जिहादी आतंकवादियों ने केवल उन छब्बीस हिन्दू पर्यटकों पर ही नहीं बल्कि भारत के सौ करोड़ सनातनी हिन्दू समाज पर हमला किया था।

भारत की सरकार तथा जनता ने ठान लिया कि इन खूनी इस्लामी आतंकवादियों तथा उनसे हिन्दुओं का नरसंहार करवाने वाले पाकिस्तान से ऐसा बदला लिया जाएगा कि शैतान की भी आत्मा कांप उठे। कानपुर के शुभम द्विवेदी हरियाणा के विनय नरवाल सहित यह छब्बीस हिन्दू भारत के पन्द्रह राज्यों से थे। समूचे भारत की आक्रोशित जनता के साथ आक्रोशित भारत सरकार एवं भारतीय सेना ने पाकिस्तान तथा पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी अड्डों पर हमले की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

आखिर वह बदले की घड़ी आ ही गई जब सात मई की रात्रि एक बजकर पांच मिनट से एक बजकर तीस मिनट तक केवल पच्चीस मिनट की अवधि में पाकिस्तान के अंदर चल रहे नौ आतंकी शिविरों को मिसाइलों के माध्यम से नष्ट कर दिया गया जिसके फलस्वरूप सौ आतंकी मारे गए तथा दर्जनों बंकर भी नष्ट हो गए। स्वयं प्रधानमंत्री मोदी ने इस सैन्य अभियान को **आपरेशन सिन्दूर** नाम दिया क्योंकि पाकिस्तान प्रायोजित जिहादी आतंकियों ने चुन-चुनकर छब्बीस हिन्दू पुरुषों की हत्या द्वारा उनकी पत्नियों की मांग का सिन्दूर मिटा दिया था और अब उन्हीं हिन्दू सुहागिनों के मिट चुके सिन्दूर का बदला लेने पाकिस्तान के विरूद्ध ऑपरेशन सिन्दूर सैन्य अभियान प्रारम्भ किया गया। उन विधवाओं ने प्रधानमंत्री मोदी को पहलगाम घटना आखिर बता ही दी थी।

भारत के तथाकथित सेकुलर नेताओं, वामपंथी बुद्धिजीवियों तथा इस्लामी नेताओं ने इस बात पर घोर आपत्ति की कि हिन्दू हत्या का बदला लेने की क्या आवश्यकता है। इस छोटी सी बात के लिए पाकिस्तान से युद्ध करना उचित नहीं है तथा सिन्दूर सनातनी हिन्दू संस्कृति का ही प्रतीक है इसलिए सैन्य अभियान को **ऑपरेशन सिन्दूर** नाम देना घोर साम्प्रदायिक बात होगी। परन्तु इन पाकिस्तान परस्त भारतीय तत्वों की आपत्तियों को खारिज करते हुए भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिन्दूर आठ, नौ और दस मई को भी जारी रखा एवं पाकिस्तान के सियालकोट, लाहौर, रावलपिंडी, कराची स्थित अनेक सैन्य ठिकानों को नष्ट कर दिया, जिसमें अनेक पाकिस्तानी सैनिक व अधिकारी मारे गए। एक ओर जहाँ भारतीय ड्रोन एवं मिसाइलों ने पाकिस्तान की चीन और तुर्की निर्मित सुरक्षा प्रणाली को भेदकर सटीक प्रहार किए, वहीं दूसरी ओर भारत के स्वदेशी तकनीक से निर्मित आकाश, पिकोरा इत्यादि द्वारा पाकिस्तानी मिसाइलों को हवा में ही नष्ट कर भारत में जान-माल का नुकसान नहीं होने दिया। भारत के मुख्य सैन्य उद्देश्य पूर्ण होने के बाद दिनांक दस मई को पाकिस्तान द्वारा शांति एवं युद्ध विराम हेतु गिड़गिड़ाने के बाद भारत ने दिनांक दस मई को दोपहर पांच बजे युद्धविराम घोषित किया इस सार्वजनिक घोषणा के साथ कि यह एक तात्कालिक, अस्थायी युद्धविराम है तथा पाकिस्तान द्वारा किसी भी शत्रुतापूर्ण कार्यवाही अथवा आतंकी वारदात होते ही तुरन्त ऑपरेशन सिन्दूर पुनः प्रारम्भ किया जाएगा। अर्थात् ऑपरेशन सिन्दूर अभी जारी है तथा भारत की सुहागिनों के सिन्दूर मिटाने वालों के समूल विनाश तक जारी रहेगा।

यद्यपि हम पाकिस्तान पर भरोसा नहीं कर सकते तथापि एक बिन्दु पर शत प्रतिशत भरोसा कर सकते हैं वह है पाकिस्तान की फितरती मानसिकता, भारत से घोर नफरत और आतंकियों का भारत के विरूद्ध उपयोग। इसलिए दो बातें भविष्य में निश्चित हैं पाकिस्तान प्रायोजित आतंकी भारत में वारदात करेंगे और बदला लेते हुए भारत पाकिस्तान से आपरेशन सिन्दूर के माध्यम से ऐसा बदला लेगा कि पाकिस्तान खंड-खंड होकर बिखर जाएगा, पाकिस्तान नामक देश का मानचित्र बदल जाएगा। हाथ कंगन को आरसी क्या, निकट भविष्य में ही आतंकिस्तान उर्फ पाकिस्तान का खात्मा होते हुए हम देखेंगे। इन्हीं आँखों से और इसी जीवनकाल में। **जय हिन्द!**

ऑपरेशन सिंदूर - भारतीय तार्किकता

पार्थ शर्मा

आतंकवाद के खिलाफ भारत के वर्षों से चल रहे युद्ध में लिए गए सबसे महत्वपूर्ण और सफ़ल कदमों में से एक, **ऑपरेशन सिंदूर** ने एक माह पूरा कर लिया है और यह ऐसी ही तार्किकता के साथ आगे बढ़ता रहेगा। 7 मई 2025 को शुरू होने वाले **ऑपरेशन सिंदूर** को 22 अप्रैल 2025 के पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में देखा गया था। परंतु बाद में भारत सरकार द्वारा वैश्विक स्तर पर यह स्पष्ट कर दिया गया कि ऑपरेशन सिंदूर महज एक हमले के बाद होने वाली प्रतिक्रिया नहीं बल्कि भारत के द्वारा वर्षों से सहन की जा रही पीड़ा से मुक्ति तथा भारतीय सीमाओं पर आतंकवाद-मुक्त वातावरण

के पुनः निर्माण का निर्भीक अभियान है।

पहलगाम आतंकी हमला पाकिस्तान की ओर से भारत में सांप्रदायिक विसंगति उत्पन्न करने का एक क्रुर व अमानवीय कृत्य था। जिसके जवाब में इस अभियान द्वारा भारतीय नेतृत्व ने भारत की लोकतांत्रिकता, बहुलतावादी विचार व शांतिप्रियता का उदाहरण दिया है। इस मामले में पाकिस्तान की नित्य अस्वीकार्यता व पाकिस्तानी रहनुमाओं के बीच प्रमाणित आतंकियों की प्रसिद्धि सीधे तौर पर भारत और भारतीय विचारों की श्रेष्ठता को दर्शाती है।

इस अभियान में सैन्य तत्वों की ओर रुख किया जाए तो भारतीय सेना के अदम्य साहस, तार्किकता और निपुणतायुक्त लड़ाई व बल प्रदर्शन के बारे में ज्ञात होता है। भारतीय सेना ने युद्ध किसी संप्रदाय विशेष के नहीं बल्कि उस आतंकवाद के खिलाफ लड़ा जिसका शिकार भारत दशकों से रहा है। इन प्रतिक्रियाओं के पश्चात् वैश्विक ताकतों द्वारा कई बयान दिए गए जिनके मुताबिक भारत स्वयं को युद्ध में झोंक रहा था। भारत द्वारा उठाए गए कदमों को **एक्ट ऑफ वॉर** कहा गया। परंतु आतंकवाद नामक जो विषैला सर्प दशकों से भारतीय सीमाओं और करीबी इलाकों में पल रहा है उससे निजात पाने का जो उपयुक्त व पेशेवर तरीका भारत ने अपनाया है, उसे वे ताकतें नजरअंदाज कर रहीं हैं।

सरकार द्वारा ऐसे निर्णयों पर सदैव प्रश्न उठते हैं और आगे भी उठेंगे परंतु वैश्विक ताकतों, सरकारों और साथ ही कई भारतीयों को भी अंततः इसी निष्कर्ष पर पहुंचना होगा कि पाकिस्तान की ओर से भारतीय समाज में फूट डालने वाले हिंसात्मक कृत्य भारत की शांतिभंग करने वाले वे तत्व हैं जिनका जवाब इसी निर्भीकता के साथ देना भारत और विश्व के लिए अनुकूल है।

सेना ज़िंदाबाद

तेजस ये ब्रह्मोस गगन के।
ये माली हैं राष्ट्र चमन के।
सागर में विक्रांत यही हैं, रण थल में फौलाद।
सेना ज़िंदाबाद हमारी सेना ज़िंदाबाद।।

लिखें व्योम के शौर्य गीत,
ये स्वयं व्योमिका बनकर।
दुश्मन के सम्मुख पर्वत सम,
खड़ीं सोफिया तनकर।
बूंद-बूंद यह शोणित सबकी,
रक्षा को अर्पित कर दी।
स्वाँस-स्वाँस जीवन की,
भारत माता के चरणों धर दी।
एक गीत गाते-गाते वो,
सीमाओं पर चल निकले।
देशभक्ति के भावों में,
कतरा-कतरा वो ढल निकले।
हम रहें भले न रहें मगर यह देश रहे आबाद।।
सेना ज़िंदाबाद, हमारी सेना ज़िंदाबाद।।

डॉ. रुचि चतुर्वेदी, आगरा

लव जिहाद – एक सांस्कृतिक युद्ध या सामाजिक चुनौती ?

अमित राव पवार ,देवास

भारत एक विविधताओं से भरा देश है, जहां अनेक धर्म, संस्कृतियाँ और परंपराएं सह-अस्तित्व में रही हैं। किन्तु विगत कुछ वर्षों में **लव जिहाद** एक गंभीर और विवादित सामाजिक विषय बन कर उभरा है। यह न केवल हिंदू समाज की महिलाओं की अस्मिता से जुड़ा हुआ मुद्दा है, बल्कि इससे जुड़ी घटनाएं परिवार, संस्कृति और समाज की बुनियाद को भी प्रभावित करती हैं। यह आलेख इसी विषय पर गहराई से प्रकाश डालता है।

आज से लगभग 5100 वर्ष पूर्व जब कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था, तब अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में प्रवेश कर धर्म, संस्कृति और न्याय के लिए वीरगति प्राप्त की थी। आज ठीक उसी प्रकार हिंदू समाज की बेटियाँ एक ऐसे मानसिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक चक्रव्यूह में फँसी हुई हैं, जिसे **लव जिहाद** कहा जा रहा है। इसमें फर्क केवल इतना है कि अभिमन्यु ने धर्म के लिए युद्ध लड़ा और लव जिहाद में धर्म को ही निशाना बनाया जाता है।

लव जिहाद क्या है?

लव जिहाद एक ऐसी संगठित मानसिकता और साजिश है, जिसमें एक समुदाय विशेष के पुरुष हिंदू लड़कियों को प्रेम के जाल में फँसाकर धर्मांतरण के लिए प्रेरित करते हैं। इसका उद्देश्य न केवल उनके जीवन को बर्बाद करना होता है, बल्कि हिंदू समाज की जड़ों को भी कमजोर करना होता है।

हाल ही में आई फिल्म **द केरला स्टोरी** इस विषय का एक उदाहरण प्रस्तुत करती है, जिसमें दिखाया गया कि कैसे तीन हिंदू सहेलियों को उनकी एक मुस्लिम मित्र के माध्यम से ब्रेनवॉश कर कट्टरपंथ के रास्ते पर धकेला गया। परिणामस्वरूप, उनका परिवार टूट गया और वे स्वयं भी भयावह अंत को प्राप्त हुई। यह केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि उन सैकड़ों बेटियों की कहानी है जो इसी तरह के षड्यंत्र का शिकार बनी हैं।

लव जिहाद केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक संकट है। यह हमारे परिवार, धर्म, सामाजिक मूल्यों और संस्कारों पर सीधा आघात है। इसमें न केवल प्रेम को हथियार बनाया जाता है, बल्कि भावनाओं, विश्वास और युवावस्था की नासमझी को भी शोषण का माध्यम बनाया जाता है।

उत्तरदायित्व किसका?

इस समस्या के लिए केवल दूसरे समुदाय को दोष देना पर्याप्त नहीं है। कहीं न कहीं हमारी बेटियाँ भी इस संकट की भागीदार बन रही हैं। यह आवश्यक है कि माता-पिता अपने बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षाएँ भी दें। जब लड़कियाँ आत्मनिर्भर, जागरूक और धर्म के प्रति सजग होंगी, तभी वे किसी भी प्रकार के भावनात्मक या मानसिक शोषण से स्वयं को सुरक्षित रख पाएंगी।

छोटे बच्चों की बड़ी पहल

प्लास्टिक के कचड़े को कम करने के लिये देवास में वीर सावरकर तरण पुष्कर पर 31 बर्तनों के सेट के साथ नववर्ष पर बर्तन बेंक की स्थापना हुई। यह बर्तन बैंक तरण-पुष्कर में तैरना सीखने आने वाले बच्चों नें शुरू किया गया है।

सनातन की धरती पर असमानता का अनुच्छेद?

राजेश कुमरावत 'सार्थक'

भारत, वह भूमि है जहाँ वेदों की ऋचाएं हवाओं में गूंजती थीं, गंगा के तट पर गुरुकुलों में ज्ञान बहता था, और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में जीवन पनपता था। यह देश केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत सनातन संस्कृति का स्पंदन है। परंतु बीते कुछ दशकों में, जब देश की बागडोर उन हाथों में रही जो पाश्चात्य दृष्टिकोण से ग्रस्त थे, तब भारत की मूल आत्मा को ही झुकाने के प्रयास हुए। सनातन संस्कृति को **प्राचीन** बताकर हाशिए पर ढकेला गया और **धर्मनिरपेक्षता** के नाम पर भेदभाव के बीज बोए गए। इन्हीं बीजों में से एक है - **अनुच्छेद 30।**

❖ धर्मनिरपेक्षता या धार्मिक विषमता?

भारत का संविधान समावेशिता का प्रतीक है, लेकिन इसमें कुछ धाराएं ऐसी भी हैं, जिन पर पुनर्विचार समय की माँग बन चुका है। इनमें प्रमुख है अनुच्छेद 30, जो भारत के धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी पसंद के शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने और संचालित करने का विशेषाधिकार देता है। यह अधिकार लोकतांत्रिक दृष्टि से उचित प्रतीत होता है, परंतु जब बहुसंख्यक समुदाय–विशेषकर सनातन परंपरा के अनुयायी–इसी अधिकार से वंचित महसूस करें, तो यह असंतुलन चिंता का विषय बन जाता है।

❖ क्या यह समानता है?

मदरसे, मिशनरी स्कूल और कॉन्वेंट संस्थान न केवल धार्मिक शिक्षा देते हैं, बल्कि उन्हें राज्य से वित्तीय सहायता भी प्राप्त होती है। दूसरी ओर, गुरुकुल, वैदिक पाठशालाएं और गीता आधारित शिक्षण संस्थान सरकारी सहायता और संवैधानिक सुरक्षा से वंचित हैं। यह स्थिति क्या **धर्मनिरपेक्षता** की आत्मा के अनुकूल है?

क्या यह विडंबना नहीं कि जिस सनातन संस्कृति ने इस देश को आत्मा दी, आज उसी संस्कृति के अनुयायियों को बहुसंख्यक होने के नाम पर संवैधानिक अधिकारों से वंचित किया जा रहा है? क्या यह उनके धैर्य की परीक्षा है या एक मौन दंड, जिसे **धर्मनिरपेक्षता** की चादर में लपेट कर सदियों तक भुगतने को कहा जा रहा है?

❖ संवैधानिक ढांचा-समानता बनाम विशेषाधिकार

अनुच्छेद 30 (1) कहता है - भारत के सभी अल्पसंख्यकों को, चाहे वे धर्म या भाषा के आधार पर हों, अपनी पसंद के शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने और उनका प्रबंध करने का अधिकार होगा।

सवाल यह है कि बहुसंख्यक हिंदू समाज को अपनी धार्मिक शिक्षा के लिए क्यों समान संवैधानिक संरक्षण नहीं दिया गया? क्या यह बहुसंख्यक होने की **सज़ा** है? संविधान के अनुच्छेद 14 और 15 समानता और भेदभाव न करने की बात करते हैं, लेकिन अनुच्छेद 30 व्यावहारिक रूप में विषमता को जन्म देता है।

❖ इतिहास की परछाइयाँ- नेहरू बनाम पटेल?

लोककथाओं और कुछ ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, जब यह अनुच्छेद तैयार किया गया, तब सरदार वल्लभभाई पटेल ने इसका विरोध किया था। हालांकि इन दावों की सत्यता की संवैधानिक पुष्टि नहीं की जा सकती, लेकिन यह चर्चा ज़रूर करती है कि इस प्रकार का कानून यदि तब बहुसंख्यक समाज के विरोध में गया, तो उसका समावेश आज भी प्रश्नचिह्न बना हुआ है।

❖ सनातन संस्कृति -ज्ञान की मूलधारा

सनातन परंपरा केवल धर्म नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है, जिसमें योग, आयुर्वेद, वेद, गीता और उपनिषद जैसे शास्त्र केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और मानवतावादी दृष्टिकोण लिए हुए हैं। इनकी शिक्षा देना किसी एक धर्म को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि भारत की मूल पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखना है।

❖ एकतरफा नियंत्रण - मंदिर बनाम मस्जिद-चर्च

मंदिरों की संपत्तियों पर सरकारी नियंत्रण, जबकि मस्जिदों और चर्चों की स्वतंत्रता–यह भी एक अलग स्तर की असमानता है। यदि धार्मिक स्थलों की सम्पत्ति को सभी के लिए समान रूप से नियंत्रित या स्वतंत्र रखा जाए, तो न केवल संतुलन बना रहेगा, बल्कि हिंदू समाज के प्रति उपजी उपेक्षा की भावना भी समाप्त होगी।

❖ समाधान की दिशा में सोचें

हमारा यह लेख किसी समुदाय के विरोध में नहीं, बल्कि संवैधानिक समरसता की मांग में है। हम भारत सरकार और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से अपील करते हैं कि जैसे उन्होंने धारा 370 और तीन तलाक जैसे ज्वलंत विषयों पर साहसिक निर्णय लिए, वैसे ही अब अनुच्छेद 30 पर भी पुनर्विचार किया जाए।

❖ सार्थक प्रस्ताव

1. अनुच्छेद 30 में संशोधन कर यह स्पष्ट किया जाए कि बहुसंख्यक समुदाय को भी अपनी परंपराओं पर आधारित शैक्षणिक संस्थान चलाने का समान अधिकार प्राप्त है।
2. सरकारी अनुदान प्रणाली में समानता लाकर धार्मिक शिक्षा के मानकों को स्पष्ट किया जाए।
3. मंदिरों की स्वायत्तता बहाल कर धार्मिक स्वतंत्रता को व्यावहारिक रूप दिया जाए।

❖ अंत में-धर्म नहीं, संविधान बचे

हमारी यह आवाज़ **धर्म की श्रेष्ठता** नहीं, **संवैधानिक समता** की है। अगर भारत को वास्तव में **सबका साथ, सबका विकास** की ओर ले जाना है, तो फिर शिक्षा, संस्कृति और अधिकारों में कोई पक्षपात न हो– यही राष्ट्रधर्म है, यही सनातन धर्म की आत्मा भी।

जिहादी जड़ों को काटना ही होगा

अग्निशेखर - प्रसिद्ध लेखक

कश्मीर में एक वर्ग है जो यहां निजाम ए मुस्तफा यानि इस्लामी शासन चाहता है। शरिया चाहता है। वह भारत को अपना देश नहीं मानता। वह कश्मीरी हिन्दुओं को बढ़ने देना नहीं चाहता।

जम्मू-कश्मीर में पिछले 35 वर्ष से जिहाद चल रहा है। इस्लामिक आतंकी चुन-चुनकर हिन्दुओं को मारते आ रहे हैं। 1990 से लेकर अब तक कश्मीर में हिन्दुओं को लेकर बहुत ज्यादा कुछ नहीं बदला है। इसलिए पहलगाम में जो हुआ, वह हिन्दू नरसंहार ही है। जो इसे नहीं मानता वह सत्य को झुठला रहा है। आज घाटी ही नहीं अपितु जम्मू क्षेत्र भी आतंकी तपिश से जूझ रहा है। पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों ने एक सुनियोजित साजिश के तहत जम्मू क्षेत्र की ओर रुख किया है। राजौरी, कठुआ, पुंछ पिछले तीन-चार साल से अत्यधिक प्रभावित हैं। यहां के कई स्थान तो सेना के लिए भी दुर्गम बने हुए हैं। जिहादी दिन-प्रतिदिन हिंदू बहुल इलाकों में अपनी पैठ को मजबूत करते हुए जम्मू रीजन को घेरने की कोशिश में लगे हैं। लेकिन एक वर्ग है, जो इस पर अलग-अलग बातें करके पर्दा डालता है। यह समूचे जम्मू -कश्मीर के लिए ठीक नहीं है।

आतंकियों की बौखलाहट का कारण?

अनुच्छेद 370 हटने के बाद आतंकग्रस्त जम्मू-कश्मीर में शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव भी हो गए, सरकार भी बन गई। और इस सबसे बौखलाया पाकिस्तान चिढ़ा हुआ है। ऊपर से घाटी में पर्यटन फल-फूल रहा है। 2024 में लगभग 35 लाख, 2023 में 21324 लाख और 2022 में 26 लाख पर्यटक सिर्फ कश्मीर घाटी पहुंचे थे। इनमें हजारों की संख्या में विदेशी पर्यटक भी शामिल हैं। भारत ने 2023 में जी-20 की अध्यक्षता की और इस दौरान देश भर में तमाम बैठकें हुई। जम्मू -कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में मई, 2023 में जी-20 की टूरिज्म वर्किंग समूह की बैठकें हुई। श्रीनगर में बहुत सी जगहों पर विदेशी प्रतिनिधिमंडल का जाना हुआ। ये सभी चीजें कश्मीर को सामान्य कर रहीं थीं। निश्चित रूप से ऐसे दृश्य आतंकियों और उनके आकाओं को असहज कर रहे थे।

पहलगाम में इस्लामिक आतंकी मारने से पहले यह पहचान कर रहे थे कि कि व्यक्ति हिंदू है या नहीं। जिहादी आपको सिर्फ और सिर्फ काफिर की दृष्टि से देखते हैं। लेकिन हम उन्हें इस दृष्टि से देख ही नहीं पाते। कश्मीर का जो मूल चरित्र है, उसके पीछे मुस्लिम बहुसंख्यक राज्य है, जिसे आप सेकुलर बनाना चाहते हैं। अगर वहां के लोग सेकुलर ही होते तो 1988 से अब तक कश्मीर से विस्थापित हुए हिन्दू अपने घरों में बस चुके होते। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। क्यों नहीं हुआ, उसकी पड़ताल की जानी चाहिए। क्योंकि कश्मीर में एक ऐसा वर्ग है जो यहां निजामे-मुस्तफा का शासन चाहता है। शरिया चाहता है। यह भारत को देश नहीं मानता।

वह कश्मीरी हिन्दुओं को बसने नहीं देना चाहता। यह जानता है कि कश्मीर में जैसे ही कश्मीरी हिन्दू बसेगा, वैदिक संस्कृति से कश्मीर गुंजायमान होने लगेगा। भारतीयता का शंखनाद होने लगेगा। भारत की बात होने लगेगी। भारत माता की पूजा होने लगेगी। क्या उस वर्ग को कभी यह बर्दाश्त होगा जिसने बंदूक के दम पर लाखों कश्मीरी हिन्दुओं को पलायन करने पर मजबूर कर दिया। मेरा मानना है कि चाहे मुर्शिदाबाद हो या कश्मीर, जब तक नरसंहार पर चुप रहोगे तो ये रक्तबीज बढ़ते ही रहेंगे। कल मालदा था, आज पहलगाम है और अगले दिन कहीं और हिन्दुओं को लक्षित करके ऐसी ही घटना को अंजाम दिया जाएगा। पहलगाम में पर्यटकों को इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि वे हिंदू थे। दूसरा, देश के अलग-अलग स्थानों से आए थे। इसलिए पूरे देश में एक संदेश गया। यह संदेश क्या है कि कश्मीर में अभी कुछ नहीं बदला है। कश्मीर में आज भी आतंकवाद वैसा ही है जैसा था। इसलिए जड़ों पर प्रहार करने की जरूरत है। तना काट देने से काम नहीं चलेगा। **- साभार पांचजन्य**

झाबुआ अंचल की गर्मियों में फिर दिखने लगे हैं रामफल

झाबुआ अंचल की गर्मियों में फिर दिखने लगे हैं रामफल - प्राकृतिक मिठास और औषधीय गुणों से भरपूर ये फल गांवों की पहचान हैं। आप देख रहे हैं ये तस्वीरें - बरखेड़ा गाँव, कल्याणपुरा क्षेत्र में हैं। इसकी उपस्थिति बताती है कि कैसे हमारा झाबुआ अंचल हर मौसम में खास है।

रामफोळ झाबुआ अंचल

रामफल, जिसे एनोना रेटिकुलाटा (Annona reticulata) भी कहा जाता है, एक उष्णकटिबंधीय फल है जो सीताफल (कस्टर्ड एप्पल) की तरह दिखता है और कई स्वास्थ्य लाभों के लिए जाना जाता है।

रामफल के बारे में -

- अन्य नाम - कस्टर्ड एप्पल, जंगली मिठाई, सॉर्सोप
- पौधे का प्रकार -अर्ध-सदाबहार पर्णपाती पौधा
- स्वाद - कस्टर्ड सेब जैसा
- उपलब्धता - मुख्य रूप से असम, गुजरात, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, केरल, तमिलनाडु और कुछ अन्य राज्यों में पाया जाता है।

फायदे-

- वजन घटाने में मदद करता है
- डायबिटीज के लिए फायदेमंद
- ब्लड शुगर को कम करने में मदद करता है
- कैंसर से लड़ने में मदद करता है
- बालों के झड़ने से राहत दिलाता है और त्वचा का ग्लो बरकरार रखता है

- पाचन तंत्र को बेहतर बनाता है
- इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है
- विटामिन सी का अच्छा स्रोत है

ध्यान दें -

- रामफल के बीजों को खाने से बचना चाहिए क्योंकि उनमें जहर होता है
- पौधे की देखभाल - रामफल का पौधा धूप वाली जगह पर लगाया जा सकता है और इसे नियमित रूप से पानी देना चाहिए।

गरमी बढ़ रही है ...

साभार - आदरणीय श्वेता पाठक जी

पहले समय में लोग फलदार और छायादार वृक्ष और पौधे लगवाते थे ... आज कल लोग इतने आधुनिक हो गए हैं कि ऐसे पेड़-पौधे लगवाते हैं कि जो न फलदार होते हैं, न ही फूलदार होते हैं और न ही छायादार... ।

आजकल लोग दुबई में या जो रेगिस्तान में खजूर/पाम और उसकी प्रजाति के पौधे हैं उनको बड़े शौक से लगवा रहे हैं जिसका न फल हो, न फूल हो न छाया हो ...।

अरे दुबई एक ऐसा देश है जहाँ की जलवायु वनस्पतियों के अनुकूल नहीं है, वहाँ वही पौधे उगते हैं जो तेज धूप और बिना पानी के हो सकें .. लेकिन भारत की जलवायु तो बड़ी समृद्ध है...यहां अलग-अलग ऋतुएं अलग-अलग पौधों के उगाने में सहायक है....फिर यहां दुबई की नकल क्यूं..!!!!

अरे पहले राजा-महाराजा ऐसे पेड़ लगवाते थे कि उनके राज्य में कोई भूखा-प्यासा तक न सो पाये ... कोई गर्मी से मर न पाए.. ।

पहले लोग तीर्थयात्रा पर निकलते थे तो पैदल ही अयोध्या, मथुरा के दर्शनों के लिए निकलते थे ... पास में केवल सत्तू, एक लोटा और एक रस्सी होती थी ..जहाँ कुवाँ देखा वहाँ रस्सी लगाकर लोटे से पानी खींच लिया और सत्तू बनाकर खा लिया। बाकी का जिस बगीचे से गुजर रहे हैं तरह-तरह के फल और खाद्य सामग्री से पेट भर रहे हैं... ।

इसलिए कृपया फलदार, फूलदार और छायादार वृक्ष या पौधे ही लगवायें ओर खासकर भारतीय वृक्षों को महत्ता दें..अगर आप चाहते हैं कि तमाम रंग-बिरंगे पक्षी और तितलियों से आपका प्राँगण भरा रहे तो विदेशी पाम (Palm) इत्यादि को तिलांजलि दें।

आपके देश में 6 ऋतुएँ हैं, जहाँ हर प्रकार की वनस्पति हो सकती है ... आप जैसा सौभाग्यशाली नागरिक होना दुर्लभ है मौसम और जलवायु के मामले में ...पेड़ पौधों के मामले में आप बहुत समृद्ध हैं उसका लाभ लीजिये.. ।

शिवगंगा की हलमा व पर्यावरण

निलेश कटारा

शिवगंगा की हलमा व पर्यावरण संवर्धन की देशी परंपरा माता वन से गांवों में लहलहाने लगे जंगल मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल जिले झाबुआ में पर्यावरण और जल संरक्षण की अनूठी परंपरा बन चुकी नारी शक्ति। यहां हर वर्ष जिले के सैंकड़ों गाँवों के हजारों लोग कई-कई दिन जुटते हैं और सामूहिक श्रम के माध्यम से क्षेत्र में जल संरचनाएं बनाते हैं।

शिवगंगा झाबुआ अंचल की हलमा की परंपरा का लगातार उपयोग कर पर्यावरण के संरक्षण व संवर्धन में अहम

भूमिका निभा रहा है। इस परंपरा को अब झाबुआ मुख्यालय से ग्रामीण अंचल की ओर रुख करके गांव-गांव मे कट चुके जंगल पुनः जीवित करने का कार्य किया जा रहा है। शिवगंगा झाबुआ की प्रेरणा से अंचल की परमार्थी परम्परा हलमा करके गांव वालों ने कर दिया अद्भुत कार्य, पर्यावरण संरक्षण की पहल से गाँव-गाँव हो रहे हैं जंगल। माता वन के संरक्षण का संकल्प लिया पिछले कई साल से यह लोग पौधे, फलदार वृक्ष और अलग-अलग वृक्ष बांस, सागौन, सीताफल, आम, नींबू, अमरूद, पत्थरचट्टा, गलवेल, पीपल, बिल्वपत्र, खाकरा, खेरिया, करंज, नीम, इमली, अलग-अलग प्रकार के हजारों से ज्यादा पौधे लगाकर उनका संरक्षण कर रहे हैं। 870 करोड़ लीटर वर्षा जल हर साल सहेज रहे, 160 माता-वन में खड़े कर दिए पांच लाख से अधिक पेड़ झाबुआ में आज से 23 साल पहले हुए एक आयोजन ने बीते दो दशकों में आदिवासी अंचल में व्यापक बदलाव ला दिया है। 17 जनवरी 2002 को हरिभाऊ की बावड़ी पर हिन्दू संगम हुआ था जो इस क्षेत्र के पर्यावरण, शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ ही आर्थिक प्रगति में आज भी योगदान दे रहा है। उसी का परिणाम है कि **'शिवगंगा झाबुआ'** के नाम से शुरू हुई एक संस्था आज 106 बड़े तालाबों का निर्माण कराने के साथ ही 1.61 लाख कंटूर ट्रेंच बनाकर हर साल 870 करोड़ लीटर वर्षा जल का प्रत्यक्ष संग्रहण कर रही है। वनवासी समाज के दर्शन पर चलते हुए इन्होंने 160 मातावन बना डाले, जिनमें पांच लाख से ज्यादा पेड़ लगे हैं, 21 हजार से अधिक प्रशिक्षित वनवासी युवा 750 गांवों में जन, जल, जंगल और जमीन की समृद्धि के लिए काम कर रहे हैं। इस दौरान 2000 स्वास्थ्य कार्यकर्ता भी तैयार किए गए जो ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य और उनकी उन्नति के लिए जुटे हुए हैं।

बिना सरकारी मदद और लागत से 13 साल में बना दिए 106 तालाब

शिवगंगा जल संग्रहण के लिए कर रहा अनूठा प्रयास। मानव श्रम की सार्थकता का उदाहरण है देखना हो तो आप आदिवासी अंचल झाबुआ आइए। एक समय था जब यहां केवल एक फसल ले पाते थे वजह सिंचाई के लिए पानी की कमी लेकिन अब गांव में लबालब तालाब नजर आने लगे हैं इनमें से 106 तालाब बिना सरकार की मदद और हलमा के माध्यम से बनाए गए हैं। जल बचाने का अभूतपूर्व बदलाव और आदिवासियों में जागरूकता लाने में अहम भूमिका शिवगंगा संगठन ने निभाई। इतना ही नहीं ग्रामीणों ने परस्पर सहयोग से आदिवासियों की प्राचीन परंपरा को जीवित भी किया। इन जल संरचनाओं के माध्यम से एक वर्षा काल में करीब 1510 करोड़ लीटर पानी सहेजा जा रहा है इसके परिणामस्वरूप भू जल स्तर तो बढ़ रहा है साथ ही समाज में सामूहिकता, परमार्थ, स्वाभिमान जैसे संस्कारों का पुनर्जागरण हो रहा है।

सिंदूर की शक्ति और हमले की रणनीति

रमेश शर्मा

पहलगाम में 22 अप्रैल को हुआ आतंकी हमला पिछले सब आतंकी हमलों से अलग और क्रुरतम था। इस हमले में आतंकियों ने हिंदुओं को उनकी पत्नियों और परिवार की महिलाओं के सामने गोली मारी थी। विवश महिलाओं ने अपने पति और स्वजनों का प्राणान्त होते देखा था। आतंकियों ने इस हमले से भारतीय समाज जीवन को तीन संदेश दिए थे। पहला, हिंदू-मुसलमान के बीच विभाजक रेखा गहरी करना, दूसरा हिंदुओं को भयभीत करना और तीसरा हिंदू महिलाओं का मनोबल तोड़ना था। अपने पतियों के शव के सामने रोती-बिलखती महिलाओं से यह कहना भी साधारण नहीं था कि **जाकर मोदी को बता देना**।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह चुनौती स्वीकार की और आतंकवाद पर प्रहार के लिए **सिंदूर** नाम ही चुना। ऑपरेशन के लिए सेना को खुली छूट देकर इसका नाम **ऑपरेशन सिंदूर** रखने का सुझाव स्वयं प्रधानमंत्री मोदी ने दिया था। आतंकियों को उत्तर देने के लिए भारत सरकार की रणनीति भी पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर किए गए पिछले दोनों हमलों से अलग थी।

भारतीय परंपरा और संस्कृति में नारी और सिंदूर के बीच अटूट संबंध होता है। सिंदूर केवल नारी के श्रृंगार का प्रतीक नहीं ही है। श्रृंगार के साथ सिंदूर नारी के शौर्य, सामर्थ्य, शक्ति के साथ आत्मविश्वास का भी प्रतीक होता है। सिंदूर की गरिमा से भारतीय साहित्य भरा पड़ा है। सिंदूर की रक्षा के लिए हुए संघर्ष की कथाएं भी पुराणों में हैं। सिंदूर का रंग उषाकाल में सूर्य का होता है। जिस प्रकार सूर्य तिमिर का नाश करता है, उसी प्रकार स्त्री के माथे का सिंदूर पति और परिवार के अनिष्ट का नाश करता है। इस तथ्य को विस्तार से व्याख्या आदि शंकराचार्य की रचना

सौन्दर्य लहरी में मिलती है-

तनोतु क्षेमं नास्तव वदनसौन्दर्यलहरि
परिवाहस्रोतः सरणिरिव सीमन्तसरनिः।
वहन्ति सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिम्
द्विषां बूंदाइबाँडक्लीवमिव नवीनार्ककिरणम् ॥

इस श्लोक में सिंदूर को प्रतीक मानकर नारी की पराशक्ति का वर्णन किया गया है, बल का वर्णन किया गया है। इसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती। स्त्री के घने और काले बाल, जो बीच में से अलग किए गए हैं, इससे शीश पर एक रेखा बनती है। इस रेखा के अंत में, जो उनके माथे के केंद्र का शीर्ष भाग है, वह सिंदूर से सुशोभित है। माथे के शीर्ष पर सिंदूर लगाना शुभता का प्रतीक है। श्लोक कहता है कि यह विभाजन बाढ़ के पानी से भरी हुई धारा का प्रतीक है। जिस प्रकार बाढ़ की उत्पत्ति का आधार प्रकृति है, उसी प्रकार आत्मबोध देने वाले सौन्दर्य का सागर सिंदूर है। (लहरें केवल किनारे पर दिखाई देती हैं, महासागर के केंद्र में नहीं। ठीक उसी प्रकार सिंदूर केवल माथे पर दिखाई देता है, जो नारी के सामर्थ्य और महिमामय सौन्दर्य का अंश मात्र है और मानवीय समता से परे भी)। सिंदूर के दोनों और घने काले बाल होते हैं, मानों काली घटाओं के बीच सूर्य उदित हो रहा हो। सिंदूर की शुभता ही जीवन को प्रकाशमान बनाती है और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति देती है।

आतंकवाद पर प्रधानमंत्री मोदी का यह प्रहार बिल्कुल सिंदूर की व्यापक महत्ता के अनुरूप रहा। आतंकियों ने यदि हिंदू नारियों के माथे से सिंदूर पौंछकर उनका मनोबल तोड़ने का प्रयास किया तो मोदी जी ने आतंकियों की कमर तोड़ने के लिए प्रहार का नाम **सिंदूर** रखा। सिंदूर महिला के माथे पर बालों की सीमा में रहता है। ठीक उसी प्रकार भारतीय सेना ने अपनी सीमा में रहकर सौ किलोमीटर तक प्रहार करके नौ आतंकवादी अड्डे मटियामेट कर दिए। इसमें भारतीय सेना की महिला कमांडरों को ही आगे किया गया। मोदी जी की योजना यहीं न रुकी, उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर की प्रेस ब्रीफिंग के लिये भी महिला कमांडरों को आगे किया।

भारत सरकार और भारतीय सेना के इस अभियान की तीसरी विशेषता जाति-मत-पंथ से ऊपर राष्ट्र को सर्वोपरि मानने का सिद्धांत स्थापित करना है। आतंकियों ने पहचान पूछकर भारत में विभाजन की रेखा गहरी करने का कुटिल षड्यंत्र किया था। लेकिन यह भारतीय सेना, सरकार और मोदी की रणनीति थी कि संपूर्ण भारत का समर्थन सरकार और सेना के साथ रहा। ऑपरेशन सिंदूर की प्रेस ब्रीफिंग के लिये जो दो महिला अधिकारी सामने आई, उनमें एक मुस्लिम समुदाय से थी। यह भी आतंकियों के मुंह पर करारा तमाचा था।

भारत सरकार और भारतीय सेना के इस अभियान की विशेषता जाति-मत-पंथ से ऊपर राष्ट्र को सर्वोपरि मानने का सिद्धांत स्थापित करना है क्योंकि आतंकियों ने पहचान पूछकर भारत में विभाजन की रेखा गहरी करने का कुटिल षड्यंत्र किया था।

मन को शांति मिली

पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए करनाल (हरियाणा) के लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की पत्नी हिमांशी ने **ऑपरेशन सिंदूर** को लेकर कहा कि वह ऑपरेशन के नाम से अधिक जुड़ा हुआ महसूस करती हैं। उन्होंने कहा, भले ही मेरे पति अब नहीं हैं, लेकिन उनकी

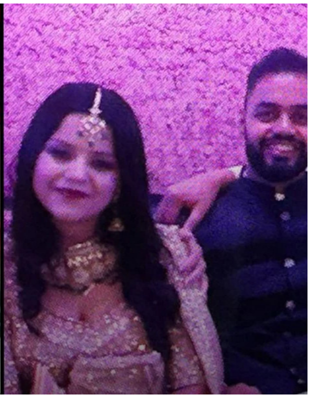

आत्मा यहीं है। **ऑपरेशन सिंदूर** से उनकी आत्मा को शांति मिली होगी। अभी तो मेरी शादी हुई थी और आतंकियों ने मेरी जिंदगी छीन ली। उन्होंने कहा कि पहलगाम में जिन लोगों ने निर्दोषों की जान ली, उनके परिवारों को तहस-नहस किया, उन्हें कड़ी सजा मिली है। सेना की इस कार्रवाई से शांति मिली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सेना का धन्यवाद। लेकिन भारतीय की कार्रवाई यहीं नहीं रुकनी चाहिए। आतंकवाद का पूरी तरह से खात्मा होना चाहिए ताकि भविष्य में किसी को मेरे जैसी पीड़ा और सदमे से न गुजरना पड़े।

- साभार पांचजन्य

आरती

जय तरुवर देवा, जय जय तरुवर देवा।
मनवांछित फल पाता, जो करता सेवा।
ॐ जय तरुवर देवा।

(1)
पंचतत्व का करें सन्तुलन, जीवन की रक्षा।
फूलो-फलो भू पर छा जाओ, है मन की इच्छा। (ॐ जय..)

(2)
प्रकृति का वरदान तुम्हीं हो, हो जीवन दाता।
शीतल छाँव हवा पाता है जो भी निकट आता। (ॐ जय..)

(3)
ईंधन ओषधि देते सबको, अमृत बरसाते।
कृपा आपकी होती है तब जन-जन घर पाते। (ॐ जय..)

(4)
धरती का श्रृंगार तुम्हीं हो, देते फुलवारी।
कदंब डाल पर वेणु बजाते, गोवर्धन धारी। (ॐ जय..)

(5)
तुलसी पीपल वटवृक्ष आंवला, पूजित हैं सारे।
हरियाली खुशहाली देते, भवसागर तारे। (ॐ जय..)

(6)
वृक्षारोपण जो करता है, उसका कुल बढ़ता।
पर्यावरण शुद्ध करे वह, नवजीवन घड़ता। (ॐ जय..)

- देवकृष्ण व्यास

हमारी बातचीत

प्रिय पाठकों ,

अगले माह से आपकी अपनी पत्रिका जागृत मालवा में एक नया स्तम्भ हमारी बातचीत प्रकाशित होगा। इस स्तम्भ में आपके सुझाव और मन की बात प्रकाशित करेंगे। आप अपने सुझाव, मालवा-निमाड़ से जुड़ी बातें और समसामयिक विषयों पर अपनी बात व्हाट्सएप, ई-मेल या पत्र के माध्यम से भेज सकते है। आप पत्रिका के लिए सुझाव और अपने मौलिक विचार भी लिख कर भेज सकते हैं, जिनकी सहायता से हम जागृत मालवा को और अधिक अपनी बना सकेंगे।

आपके चयनित पत्रों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित भी करेंगे।

व्हाट्सएप - ९९७७७१२५६१
ईमेल - jagrutmalwa@gmail.com
पता -विश्व संवाद केन्द्र, अर्चना, ७६ रामबाग, इन्दौर

मध्यप्रदेश में पैर पसारता लव-जिहाद

दुर्गेश कुमार साध, इन्दौर

हाल ही में मध्यप्रदेश में **'लव-जिहाद'** की घटनाओं में अप्रत्याशित रूप से तेज़ी से आई है और इन घटनाओं में यह महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया है कि इन घटनाओं के तार, समाज के संस्थागत ढाँचों (जैसे कोचिंग, कॉलेज आदि) से भी जुड़े हुए हैं। जिनमें 3 घटनाओं का उल्लेख अत्यंत आवश्यक है।

पिछले महीने अप्रैल में भोपाल के बागसेवनिया के टी.आई.टी. कॉलेज का लव-जिहाद काण्ड काफी चर्चित रहा। इस काण्ड के प्रकाश में आने से **'अजमेर-काण्ड'** की यादें ताज़ा हो गई थी। हुआ यह था कि उक्त कॉलेज के तीन सीनियर छात्र फ़रहान, साहिल और अली ने अपनी जूनियर हिन्दू छात्राओं से हिन्दू पहचान बताकर दोस्ती का नाटक किया। दोस्ती हो जाने के बाद उनसे पहचान बढ़ाई, बातचीत के अन्य अवसर तलाशे, उन्हें परीक्षा-विषयक नोट्स की सहायता के बहाने उनसे अंतरंगता बढ़ाई और उन्हें विश्वास में लेकर अपने कमरे पर बुलाने लगे। कमरे पर आने के बाद उक्त तीनों छात्रों ने कई लड़कियों का न केवल बलात्कार किया, बल्कि उनके अश्लील वीडियो एवं फोटो भी उतारकर अपने मोबाइल में रखे, जिसकी पुष्टि पुलिस ने भी की। इतना ही नहीं, ये छात्र इन वीडियो और फोटो के द्वारा ब्लैकमेल करके लगभग 2 वर्षों से कई लड़कियों का दैहिक-शोषण करते रहे। इस प्रकरण में कुछ लड़कियों से पैसे ऐंठने की बात भी सामने आई थी। कुछ लड़कियाँ लगातार बलात्कारों से इतनी डर गई थीं कि वे फ़रहान, साहिल और अली से शादी तक करने के लिए राज़ी हो गई थीं, मगर जब उन्होंने उन्हें इस्लाम अपनाने पर मजबूर किया, तब जाकर लड़कियों ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई। पुलिस ने एस.आई.टी. गठित कर आरोपियों के विरूद्ध रेप, ब्लैकमेलिंग, पॉक्सो एक्ट एवं म.प्र. धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम (लव -जिहाद) के तहत तीनों पर प्रकरण पंजीबद्ध किया है।

दूसरी घटना पिछले हफ़्ते इंदौर में प्रकाश में आई, जहाँ पर एक **ड्रीम ओलंपिक शूटिंग एकेडमी** नामक संस्थान के कर्ता-धर्ता एवं कोच मोहिसन ख़ान ने सुनियोजित तरीकों से हिन्दू लड़कियों को टार्गेट किया। मोहिसन, एकेडमी में आने वाली लड़कियों को शूटिंग सिखाने के बहाने न केवल ग़लत तरीकों से छूता था, बल्कि उसने कई लड़कियों को डराकर अपने साथियों एवं भाइयों द्वारा गैंग-रेप भी करवाया। आरोपी के मोबाइल में लगभग 150 हिन्दू युवतियों के आपत्तिजनक वीडियो एवं फोटो प्राप्त हुए हैं, जिनके द्वारा वह उन्हें अवश्य ही ब्लैकमेल करता रहा होगा। ज्ञातव्य है कि यह प्रकरण **'बजरंग दल'** के प्रयासों से प्रकाश में आया, वर्ना यह कोच और भी कई हिन्दू लड़कियों को निशाना बनाता रहता।

भोपाल एवं इन्दौर की घटनाओं के तुरंत बाद उज्जैन में एक घटना प्रकाश में आई, जिसमें शाहरूख नामक युवक ने राजनांदगॉव से महाकालेश्वर मंदिर में दर्शन के लिए आई एक लड़की से दुष्कर्म का प्रयास किया। उक्त युवक एक मैजिक चालक

है एवं छद्म हिन्दू नाम **'सोनू'** बताकर हिन्दू लड़कियों से दोस्ती करता था। शाहरूख के मोबाइल में 145 हिन्दू लड़कियों के नंबर मिले हैं, जिनसे वह सोनू बनकर चैटिंग करता था। उक्त प्रकरण में युवती ने अपने परिचित सोनू उर्फ शाहरूख को दर्शन करवाने के लिए बुलवाया, मगर उसने उसे मैजिक की अनुपलब्धता बताकर बाइक पर जाने के लिए राजी कर लिया और एक जगह सुनसान जगह देखकर दुष्कर्म का प्रयास किया। लड़की की सजगता से शोर मचाने के कारण कुछ राहगीर मदद के लिए आए और उन्होंने शाहरूख को पुलिस के हवाले कर दिया।

ये घटनाएँ सामान्य घटनाएँ नहीं हैं। यह हिन्दू समाज पर सीधा हमला है। विधर्मी, अब हिन्दू परिवारों तक पहुँच बना चुके हैं। यह भी चिंतनीय है कि न तो समाज को और न ही प्रशासन को ऐसे षड्यंत्रों की भनक लग पा रही है। इसके लिए एक ऐसे ढॉचे की आवश्यकता है, जो कि प्रशासन के साथ इस विषय पर आमूल कार्य कर सके।

देवी अहिल्याबाई होलकर का हरित दर्शन

अरुंधती सिंह चंदेल

मालवा की भूमि तप रही थी। सूर्य की किरणें जैसे आग की चादर ओढ़ा देती थीं इस पठारी क्षेत्र को। पर उसी तपती धरती पर एक स्त्री ने ठंडी छाया बनकर शासन किया- देवी अहिल्याबाई होलकर। उनके शासनकाल को लोग न्याय, धर्म और सेवा के लिए स्मरण करते हैं, पर एक महत्वपूर्ण पक्ष जो अक्सर छूट जाता है, वह है उनका प्रकृति के प्रति समर्पण और पर्यावरण के संरक्षण में उनका अद्भुत योगदान। उनके लिए शासन केवल राजनीतिक दायित्व नहीं था- यह एक आध्यात्मिक कर्तव्य था। उन्होंने शासन को समाज और प्रकृति के संतुलन का माध्यम माना। जब वे महेश्वर की राजगद्दी पर बैठीं, तो नर्मदा नदी उनके चिंतन की धुरी बन गई। वे नर्मदा को माँ मानती थीं और माँ की रक्षा के लिए उन्होंने वह सब किया जो एक पुत्री कर सकती है।

नर्मदा के तट पर उन्होंने अनेक घाटों, मंदिरों, कुओं और धर्मशालाओं का निर्माण कराया। लेकिन ये निर्माण केवल स्थापत्य नहीं थे- ये पर्यावरणीय संतुलन की संरचनाएँ थीं। घाटों को सीढ़ीदार बनवाया गया ताकि तट कटाव न हो, और जल का प्रवाह स्वाभाविक बना रहे। धर्मशालाओं के चारों ओर वृक्ष लगाए गए ताकि यात्रियों को छाया मिले, पक्षियों को बसेरा और भूमि को हरियाली। देवी अहिल्या ने एक सरल पर गहन नियम लागू किया- **हर एक मनुष्य, एक वृक्ष का पालक बनेगा।** यह आदेश नहीं, एक आत्मिक जिम्मेदारी थी। लोग वृक्ष लगाते, उसका नाम रखते, उसे जल देते, और किसी प्रियजन के जैसी देखभाल करते थे। इस परंपरा ने मालवा की धरती पर एक हरित चेतना का संचार किया। उस समय यह क्षेत्र जलवायु परिवर्तन से नहीं, बल्कि प्रेम और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व से परिभाषित होता था।

मालवा का भूगोल कठिन था- पठारी, गर्म और शुष्क। देवी अहिल्या ने समझा कि यदि इस भूमि को टिकाऊ बनाना है, तो गहराई से सोचकर वृक्षारोपण करना होगा। उन्होंने काँटेदार वृक्षों- बबूल, कीकर, खेजड़ी का चयन किया, जो कम जल में भी जीवित रहते हैं और अपनी गहरी जड़ों से वर्षा का जल नीचे भूमि में संचित करते हैं। यह नीति उस समय वैज्ञानिक प्रतीत न हो, पर इसका प्रभाव अत्यंत व्यावहारिक और दूरदर्शी था। भूमि की उर्वरता बनी रही, तापमान नियंत्रित रहा और मृदा का क्षरण रुका।

और तब, एक दिन दक्षिण से आए एक साधु ने उन्हें कृष्णा नदी की कथा सुनाई- कैसे वह नदी दक्षिण भारत की जीवनरेखा है। देवी अहिल्या के मन में विचार आया- यदि कृष्णा का जल किसी रूप में मालवा तक लाया जा सके तो यहाँ के लोग भी लाभान्वित हो सकते हैं। यह केवल स्वप्न नहीं था- उन्होंने तत्काल अभियंता, कारीगर और स्थानीय ज्ञानियों को बुलाया और तकनीकी साधनों से कृष्णा की एक सहायक धारा को मालवा की ओर मोड़ने का प्रयास आरंभ किया। इतिहास साक्षी है कि उनके इस प्रयास से मालवा के कई क्षेत्रों में जल की पहुँच सुनिश्चित हुई, जो वर्षों तक वहाँ के लोगों के लिए जीवनदायिनी सिद्ध हुई। उनके कार्य केवल भौतिक नहीं, सांस्कृतिक भी थे। देवी अहिल्या मानती थीं कि जहाँ वृक्ष हैं, वहीं देवता वास करते हैं। इसलिए उन्होंने मंदिरों, घाटों और जनस्थलों के आसपास वृक्षारोपण को अनिवार्य किया। उनके बनवाए गए बाग-बगीचे केवल सजावट नहीं थे- वे छाया, फल, औषधि और जीवन के स्रोत थे। यह कहना गलत नहीं होगा कि देवी अहिल्याबाई होलकर ने एक ऐसे समय में पर्यावरण संरक्षण की नींव रखी, जब दुनिया में **प्रदूषण** और **जलवायु संकट** जैसे शब्द प्रचलन में भी नहीं थे। पर उनके कार्य इतने समर्पित और गहरे थे कि आज की परिस्थिति में वे एक आदर्श बन सकते हैं।

जब हम आज हरियाली की कमी, बढ़ते तापमान और जल संकट की बात करते हैं, तो हमें अहिल्याबाई की वह छवि याद आनी चाहिए जो नर्मदा के तट पर बैठी है, हाथ में तुलसी की माला है, और मन में केवल एक ही प्रार्थना- **प्रकृति बचे, तो प्रजा बचे।** देवी अहिल्याबाई होलकर केवल एक राजा की विधवा नहीं, केवल एक राजमाता नहीं, वह प्रकृति की पुत्री थीं-जिन्होंने अपने समय से बहुत आगे सोचा, और जो आज भी अपने विचारों से हमें रास्ता दिखा रही हैं। आज जब धरती गर्म हो रही है, जल सूख रहा है, और वृक्ष कट रहे हैं- तो इतिहास की यह स्त्री जैसे फिर से पुकार रही है- **राजा वही, जो प्रजा और प्रकृति दोनों की रक्षा करे।**

लोकमाता अहिल्याबाई त्रिशताब्दी वर्ष का समापन कार्यक्रम संपन्न

लोकमाता अहिल्याबाई त्रिशताब्दी वर्ष के समापन का भव्य कार्यक्रम **मैं भी अहिल्या** का प्रारंभ ओडिसी नृत्य की अनुपम प्रस्तुति के साथ हुआ। मंच पर अतिथि आगमन के साथ ही माता अहिल्या की मूर्ति के सम्मुख दीप प्रज्वलन किया गया।

मंच पर परम पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य ज्ञानानंद जी भानपुरा पीठ, श्रीमती स्मृति ईरानी, श्रीमती सुमित्रा महाजन, श्रीमती सोनल मानसिंह, श्रीमती मालिनी अवस्थी, श्रीमती चंद्रकला पाडिया, श्री उदय राजे जी होलकर, श्री रघु राजे, श्रीमती मीरा दवे, श्री मनोज फड़नीस, श्रीमती माला ठाकुर, श्रीमती भारती कुशवाहा एवं समिति के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए समिति की अखिल भारतीय सचिव श्रीमती माला ठाकुर ने वर्ष भर किए गए कार्यों का विवरण दिया। उन्होंने बताया कि देश भर में किए गए कुल साठ हजार कार्यक्रमों के माध्यम से पैंसठ लाख लोग जुड़े। उन्होंने कहा कि ये एक आयोजन का समापन हो सकता है किंतु मातृशक्ति ने जो संकल्प लिया है, वह अनवरत रहेगा।

समिति की संरक्षक श्रीमती सोनल मानसिंह ने माता अहिल्या के जीवन को दिव्य बताते हुए उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने कहा कि वे राज्य शासन के सभी सिद्धांतों में निष्णात थीं। उन्होंने प्रशासन से आग्रह किया कि माता अहिल्या के नाम पर लोकमाता अहिल्या गौरव सम्मान प्रारंभ किया जाना चाहिए तथा माता अहिल्या के जीवन को पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम में माता अहिल्या के जीवन पर आधारित एक कॉफी टेबल पुस्तक **एन इटर्नल फ्लेम** का विमोचन भी किया गया। पुस्तक के लेखक श्री अविनाश मुले ने पुस्तक में सम्मिलित विषयवस्तु का विवरण दिया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता **पद्मश्री मालिनी अवस्थी** ने कहा कि इतिहास को देखने की पश्चिमी दृष्टि ने माता अहिल्या के असाधारण और दिव्य जीवन को उपेक्षित कर दिया। वे एक ऐसी शासिका थीं जिन्होंने स्वयं को कभी साम्राज्ञी नहीं माना वरन इसके उलट स्वयं को निमित्त मान कर प्रजा को अपना परिवार मानती रहीं। उन्होंने लोकहित के सामने व्यक्तिगत पीड़ा को कभी महत्व नहीं दिया। अहिल्यामाता का जीवन संघर्षों से भरा रहा। उनकी दृष्टि व्यापक थी। जातिबंधन को भी प्राथमिकता न देकर उन्होंने गुण के आधार पर अपने दामाद का चुनाव किया। अहिल्या माता ने जनजातीय समाज के लिए भी कई कल्याणकारी कार्य किए। सेना में भील पलटन का निर्माण कर वे इस समाज को भी मुख्यधारा में लाई। उनके प्रत्येक कार्य में मातृत्व का भाव प्रकट होता था। श्रीमती मालिनी अवस्थी ने अपनी चिरपरिचित शैली में गायन के माध्यम से भी माता अहिल्या के परमार्थकार्य करने की भावना का वर्णन किया। उन्होंने अहिल्यामाता को तुलसीदासजी के समान बताते हुए कहा कि संपूर्ण भारतवर्ष में निर्माण कार्य कर उन्होंने भारत की सुषुप्त आध्यात्मिक चेतना का पुनर्जागरण किया।

वास्तव में मालवा की प्रजा ने अहिल्यादेवी के रूप में शासकीय नहीं वरन **माँ** को पाया था। जिनके संकल्प को कभी हिलाया न जा सके वे अहिल्या थीं। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि **श्रीमती स्मृति ईरानी** ने अपने वक्तव्य में समिति के कार्यों को सराहा। उन्होंने कहा कि लोकमाता अहिल्या केवल मातृशक्ति की प्रेरणा ही नहीं है वरन संपूर्ण पुरुष समाज के लिए भी मातृस्वरूप में प्रेरक हैं। अहिल्या माता का जीवन **धर्मम् चर सत्यम् वद** का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वे निर्मल भी थीं और निर्भीक भी, वे रसोई सम्हालना भी जानती थीं और तोपखाना सम्हालना भी। केंद्रीय आयोजन समिति की **अध्यक्ष श्रीमती चंद्रकला पाडिया** ने अपने समापन भाषण में कहा कि अहिल्या माता ने अपने पवित्र व्यवहार, आध्यात्मिक ऊर्जा और संकल्प के बल पर भागीरथी कार्य किए। उन्होंने अपने समय में फैली कई रूढ़ियों का विरोध करने की हिम्मत की और सफल भी हुई। वास्तव में अहिल्याबाई, माँ दुर्गा का ही स्वरूप थीं।

कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय सेवा समिति की इंदौर विभाग कार्यवाहिका आरती दीदी ने सभी प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती संगीता चौहान ने किया। राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के सामूहिक गान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

पंच परिवर्तन से होगी धर्म स्थापना : श्री विनीत नवाथे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मालवा प्रांत के संघ शिक्षा वर्ग (व्यवसायी) का समापन प्रकट कार्यक्रम के साथ पेटलावद में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में 227 शिक्षार्थियों ने सहभाग लिया। शारीरिक कार्यक्रम में स्वयंसेवकों ने समता, योग, घोष और दंड (लाठी) संचालन प्रयोगों का प्रदर्शन किया। जिसे देखने के लिए जिले भर से हजारों की सेंया में समाजजन शामिल हुए। प्रकटोत्सव स्थल पर प्रशिक्षण प्राप्त कुशलताओं का प्रदर्शन करते हुए स्वयंसेवक आम लोगों के चेहरों पर आत्मविश्वास की अनुभूति करवा रहे रहे थे। पूरे परिसर में भगवान बिरसा मुंडा, गौ शाला, भगवान श्रीकृष्ण व **वेस्ट से बेस्ट** से बने साधन झांकियों के रूप में दर्शन के लिए लगे थे। माननीय सर्वाधिकारी जी श्री सुरजीतसिंह जी जुनेजा, माननीय जिला संघचालक श्री मानसिंह जी भूरिया, श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी श्री जितेंद्रानंद जी महाराज, नरसिंहानंद सेवा आश्रम रायपुरिया, तहसील पेटलावद, जिला झाबुआ मुख्य वक्ता विनीत नवाथे मालवा प्रान्त कार्यवाह मंचासीन उपस्थित रहे।

अपने बौद्धिक में श्री विनीत जी नवाथे ने कहा कि डॉक्टर हेडगेवार ने हिंदू गौरव की स्थापना कर राष्ट्र के नव निर्माण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। संघ पर तीन-तीन बार प्रतिबंध लगे परंतु संघ प्रत्येक बार नयी शक्ति से आगे बढ़ा। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, समाज व राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्मयुक्त संरचनाओं का निर्माण किया। धर्मांतरण कराने वाली ईसाई मिशनरियां, जिहादी ताकतें और हिंदू समाज को तोड़ने वाले वामपंथी इस देश के शत्रु हैं। इनके कुकृत्यों को हमें निस्तेज करना है। हमारे वेद हमें प्रकृति की पूजा करना सिखाते हैं। आज तक जनजाति समाज वेदों में कही गई हमारी परंपराओं को अक्षुण्ण बनाए हुए है। शताब्दी वर्ष में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पांच बातों पर विशेष फोकस कर रहा है- समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण, स्वदेशी जीवन शैली और नागरिक अनुशासन। इन पांच परिवर्तनों से ही राष्ट्र में धर्म व्यवस्था स्थापित होगी।

वसुधैव कुटुम्बकम् , सर्वे भवन्तु सुखिनः मूल ध्येय वाक्य-

वसुधैव कुटुम्बकम् , सर्वे भवन्तु सुखिनः, धर्मो रक्षति रक्षितः, इदं न मम इदं राष्ट्रं जैसे अति व्यापक अर्थो वाले पाठ व्यक्ति के मानस में सहज स्थापित हों इसी लक्ष्य के साथ संघ के ये वर्ग व्यक्ति में केवल भाव परिवर्तन या भाव विकास में सहयोगी बनते हैं, और संभवतः यही व्यक्तित्व विकास का सर्वाधिक सफल मार्ग भी है जो इस वर्ग में सम्पन्न हुआ।

ग्रीष्म की छुट्टियों में जबकि सामान्यतः लोग किसी पहाड़, पठार या ठंडे स्थान पर जाकर आराम करना पसंद करते हैं, तब प्रांत के एक बड़े वर्ग ने अपनी स्वरुचि से संघ के अभ्यास वर्ग में आकर कठोर श्रम किया और अपना पसीना बहाया। किसी गुरुकुल के विद्यार्थी की भांति, यहां व्यक्ति, व्यक्तित्व विकास व राष्ट्र चिंतन हेतु कष्टप्रद परिस्थितियों में रहकर प्रशिक्षण की दक्षताओं को प्राप्त किया।

संघ शिक्षा वर्ग - कुल चार प्रकार के संघ शिक्षा वर्ग होते हैं। **प्राथमिक वर्ग** एक सप्ताह का होता है, **संघ शिक्षा वर्ग** 15 दिवस का और **कार्यकर्ता विकास वर्ग-1** 20 दिवस का, **कार्यकर्ता विकास वर्ग-2** 25 दिनों का होता है। **प्राथमिक वर्ग** का आयोजन सामान्यतः जिला करता है, **संघ शिक्षा वर्ग** का आयोजन सामान्यतः प्रान्त करता है, **कार्यकर्ता विकास वर्ग -1** का आयोजन सामान्यतः क्षेत्र करता है। **कार्यकर्ता विकास वर्ग-2** अनिवार्यतः प्रत्येक वर्ष नागपुर में ही होता है। **#vskmalwa राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मालवा प्रांत का संघ शिक्षा वर्ग पेटलावद (झाबुआ) में उद्घाटन सत्र के साथ प्रारंभ हुआ।

आतंक के विरुद्ध लाल रेखा

कवि राकेश दाँगी

ऑपरेशन सिंदूर जम्मू-कश्मीर राज्य के पहलगाम में हुए 22 अप्रैल 2025 को पाकिस्तान पोषित आतंकवादियों द्वारा 26 निहत्थे हिन्दू पर्यटकों को धर्म पूछकर, कई पर्यटकों को उनकी पत्नी एवं बच्चों के समक्ष गोलियों से भूंज दिया गया।प्रत्युत्तर में भारत ने 7 मई 2025 को आतंकवाद के विरुद्ध बड़ी कार्यवाही करते हुए, हमारी सेना ने पाक अधिकृत कश्मीर में एयर स्ट्राइक कर एक साथ एक समय मात्र 22 मिनट में 9 आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर भारतीय रणबांकुरों ने दुनिया के इतिहास में शौर्य का एक नव इतिहास रच दिया। इस पूरे ऑपरेशन को नाम **ऑपरेशन सिंदूर** दिया गया। हिंदू धर्म में सुहागिन स्त्री अपने पति की लंबी आयु, सुख-समृद्धि हेतु, सिंदूर से अपनी माँग भरती है। आतंकियों ने धर्म पूछकर हिंदू पर्यटकों की जान उनकी धर्म-पत्नियों के सामने ही ली, उन्हीं के समक्ष उनका सुहाग, सिंदूर छीना गया, जिसका बदला भारत ने ऑपरेशन सिंदूर से लिया। ऑपरेशन सिंदूर भारतीय भू-भाग से थलसेना, नौसेना और वायुसेना के समन्वित प्रयासों से सफल हुआ। भारतीय सेना द्वारा पहलगाम में मारे गए निर्दोष नागरिकों की मौत का बदला 14 दिन के अंदर 22 मिनट में लिया गया। ऑपरेशन सिंदूर में आतंकवादियों को पालने-पोसने एवं बढ़ावा देने वालों को भी संदेश दिया गया है। ऑपरेशन सिंदूर पहलगाम में मारे गए निर्दोष नागरिकों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

ऑपरेशन सिंदूर न केवल रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय के समक्ष भारत की आतंकवाद के प्रति **जीरो टॉलरेंस** नीति का भी स्पष्ट संकेत था। ऑपरेशन सिंदूर में जिस प्रकार सेना ने अत्याधुनिक भारतीय हथियारों का प्रयोग किया, वह भी अकल्पनीय है। स्व की ओर बढ़े भारत के कदमों ने विश्व समुदाय के समक्ष भारत द्वारा निर्मित शक्तिशाली हथियारों को भी प्रस्तुत किया है। अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस जैसे देशों ने आधुनिक भारत की सेना और शक्ति को देख लिया।

ऑपरेशन सिंदूर ने विश्व को यह स्पष्ट संदेश दिया कि भारत

अपनी संप्रभुता और नागरिकों की सुरक्षा के प्रति गंभीर है और आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्यवाही करेगा। ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान को भी स्पष्ट और मजबूत संदेश दिया है एवं भारतीय नागरिकों में आत्मविश्वास की भावना को बढ़ाया है। ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है, भविष्य में भी भारत आतंकवाद के खिलाफ अपनी नीति में कोई समझौता नहीं करेगा और अपनी संप्रभुता की रक्षा हेतु जरूरी हर कदम उठाएगा। जिस प्रकार दानव आततायी रावण के लिए लक्ष्मण रेखा खींची गई थी, जिसे लाँघने पर उसका सर्वनाश हो गया, ठीक उसी प्रकार आतंकवाद के विरुद्ध यह सिंदूरी लाल रेखा है जिसे लाँघा गया तो आतंकवादियों एवं उनके आकाओं का समूल विनाश तय है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

आद्य संवाददाता
देवर्षि नारद जयंती
एवं जिज्ञासा समाधान
* आयोजक *
विश्व संवाद केंद्र-मालवा
इन्दौर प्रेस क्लब
रेनसां विश्वविद्यालय, इन्दौर
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
डीएवीवी, इन्दौर

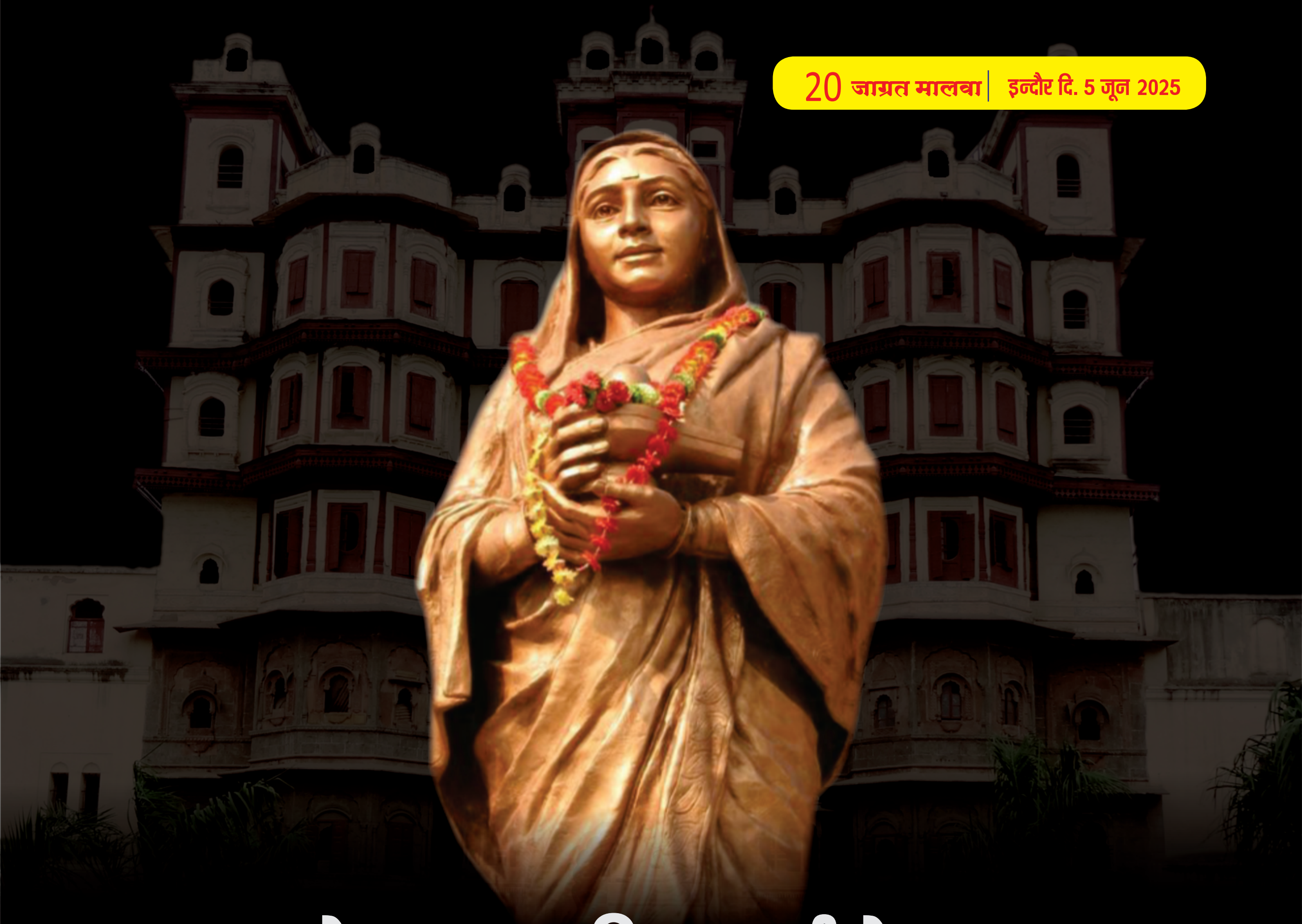

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर
जन्म त्रिशताब्दी वर्ष समापन समारोह

जुलाई माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 06 देवशयनी ग्यारस
ता. 06 पं. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयंती
ता. 23 चन्द्रशेखर आजाद जयंती
ता. 23 लोकमान्य तिलक जयंती
ता. 27 डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पु.ति.
ता. 29 नागपंचमी

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341